हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न पत्र–रीतिकालीन काव्य

Time Allowed : Three Hours **Maximum marks : 100**

प्रश्नों का उत्तर 500 शब्दों की सीमा में होना चाहिए। पृथक उत्तर–पुस्तिका (सप्लीमेंटरी कॉपी) नहीं मिलेगी।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये:

(क) भावै जहाँ विभिचारी वैद्य रमै परनारी,
द्विजगन दंडधारी चोरी परपीर की।
माननीन ही के मन मानियत मान भंग,
सिंधुहिं उलंघि जाति कीरति शरीर की।
भूलै तो अधोगतिन पावत है केसोदास,
मीचु ही सो हे वियोग इच्छा गंग नीर की।
बंध्या–वासनानि जानु विधवा सबरिकाई,
ऐसी रीति राजनीति राजा रघुवीर की।

अथवा

आंखि ही मेरी पै चेरी ठाई लखि फेरि फिरै न सुजान की घेरी।
रूप छंकी, तित ही बिथकी, अब ऐसी अनेरी पत्याति न नेरी।।
प्रान लै साथ परी पर–हाथ बिकानि की बानी पै कानि बखेरी।
पायनि पारि लइं घनानन्द चायनि बावरी प्रीति की बेरी।।

(ख) ऐसी जो हौं जानती कि जैहैं तू विषै के संग,
ऐरे मन मेरे हाथ–पांव तेरे तोरतो।
आजु लौं हौं कत नर–नाहर की नाहिं सुनि,
नेह सों निहारि हारि वदन निहोरतो।
चलन न देतों 'देव' चंचल अचल करि,
चाबुक चिताबलीन मारि मुंह मोरतो।
भरी प्रेम–पाथर नगारौ दै गरे सो बांधि,

http://questionpaperesult.com/

Scanned by CamScanner

राधावर–विरद के बारिधि में बोरतो।।

अथवा

दोष सों मलीन, गुन–हीन कविता है तो पै,
कीने अरबीन परबीन कोई सुनि है।
बिन ही सिखाए सब सीखिहैं सुमति जौ पै,
सरस अनूप रस रूप यामैं धुनि है।
दूषन को करि कै, कवित्त बिन भूषन कौ,
जो करै प्रसिद्ध ऐसो कौन सुर मुनि है।
रामै अरचत सेनापति चरचत दोऊ,
कवित रचत यातै पद चुनि–चुनि है।।

(ग) बेद राखे विदित, पुरान राखे सारयुत,
रामनाम राख्यौ अति रसना सुघर में।
हिंदुन की चोटी, रोटी राखी है सिपाहिन की,
कांधे में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में।
मीड़ि राखे मुगल मरोरि राखे पातसाह,
बैरि पीसि राखे बरदान राख्या कर में।
राजन की हद राखी तेगबल सिवराज,
देव राखे देवल धर्म राख्यौ घर में।

अथवा

सारी जनतारी की झलक झलकारि तैसी
मेसरी के अंगराग कीनो सब तन में।
तोखन तरनि के किरन तें दुगुन जीति,
जगत जवाहर जटिते आभरन में।
कवि 'मतिराम' आभा अंगनि–अंगारनि की
धूमकी–सी धार छबि छाजति कचन में।
ग्रीष्म दुपहरी में हरि कौं मिलन जात
जानीजात नारि न दवारि जुंत बन में।

2. "रीतिकालीन कवियों में बिहारी निर्विवाद रूप से सर्वाधिक लोकप्रिय कवि माने जाते हैं।" इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिये।

अथवा

"घनानंद के काव्य में सौन्दर्य, प्रेम और वेदना का अभूतपूर्व सामंजस्य दिखायी देता है।" कथन की मीमांसा कीजिये।

3. मतिराम के काव्य में भावों की गम्भीरता, सरसता एवं अभिव्यंजना की सरलता का सोदाहरण विवेचन कीजिये।

अथवा

हिन्दी के रीतिबद्ध कवियों में देव का स्थान निर्धारित करते हुए, उनके काव्य–सौष्ठव पर प्रकाश डालिये।

4 "भूषण ने रीतिकालीन काव्य परम्पराओं से पृथक नवीन भावधारा प्रवाहित की।"

http://questionpaperesult.com/

Scanned by CamScanner

कथन के आधार पर भूषण की काव्यशक्ति को रेखांकित कीजिये।

अथवा

वृन्द की काव्यकला की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए, मानव जीवन के लिए दी गई उनकी शिक्षाओं पर प्रकाश डालिये।

5. रीतिकाल के नामकरण के औचित्य पर विचार करते हुए, रीतिकाल की पृष्टभूमि स्पष्ट कीजिये।

अथवा

रीतिबद्ध काव्यधारा की विशेषताएँ बताते हुए, प्रमुख रीतिबद्ध कवियों का संक्षिप्त परिचय दीजिये।

6. रीतिकालीन काव्यशास्त्रीय अलंकार सम्प्रदाय एवं परम्परा का परिचय दीजिये।

अथवा

रस की परिभाषा देते हुए, किन्हीं दो रसों के लक्षण बताइये।

http://questionpaperesult.com/

Scanned by CamScanner